एवरशाइन

रत्नमाला

(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर आधारित हिंदी पाठ्य पुस्तक)

भाग-6

डा० सुखपाल सिंह
एम. ए. (हिंदी, अंग्रेजी)
पी-एच. डी. (हिंदी)
साहित्यरत्न (संस्कृत)

एवरशाइन पब्लिशर्ज़
Mobile No. : 9560408043, 9868877950, Fax : 28112353
E-Mail : evershinepub@gmail.com

इस पुस्तक का कोई भी अंश तथा चित्र किसी भी प्रकार से उद्धृत करना सर्वथा वर्जित है ।
इस पुस्तक की कुंजी, गाइड अथवा किसी भी प्रकार की सहायक पुस्तक छापना वर्जित है ।

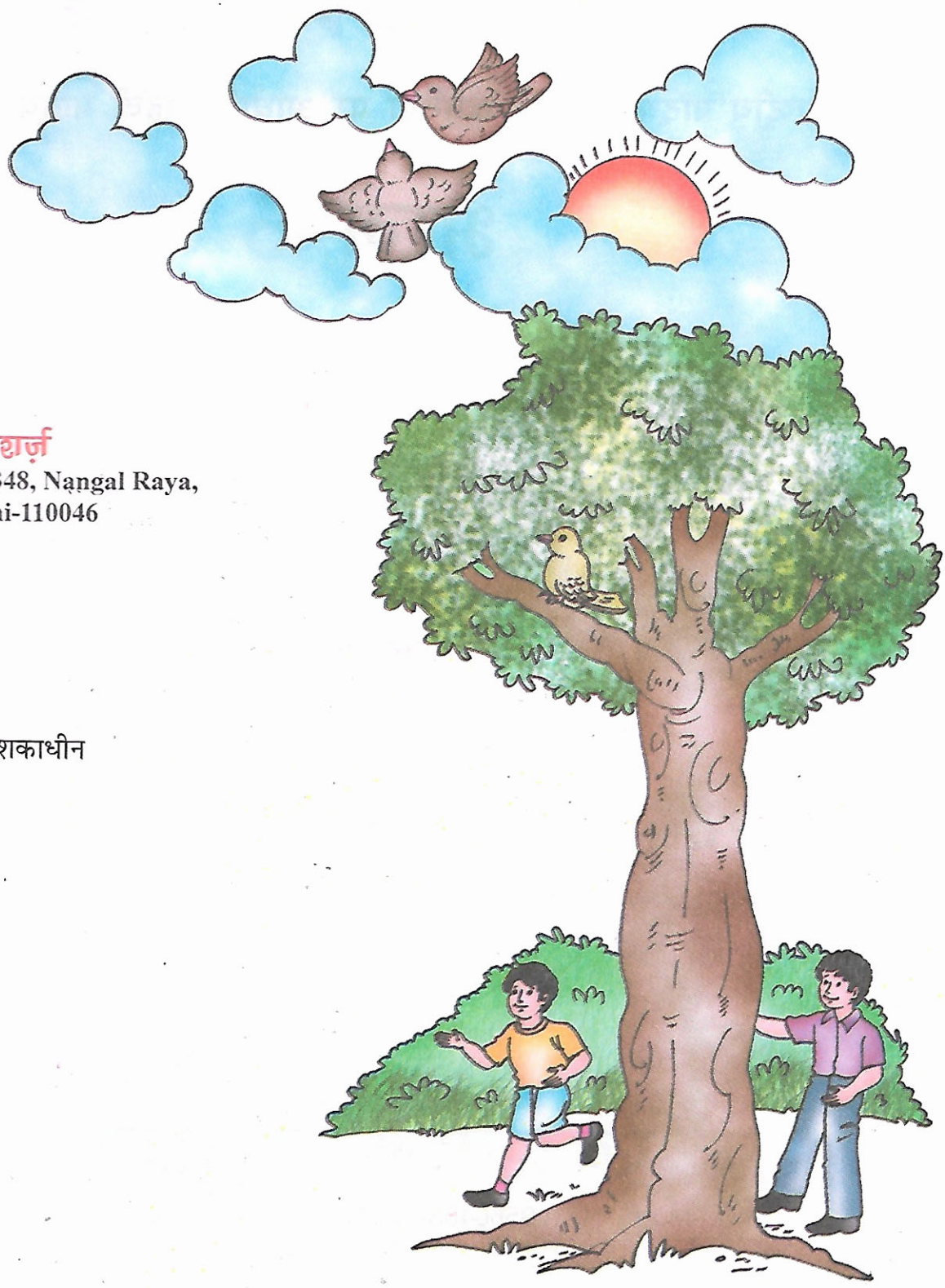

प्रकाशक :

एवरशाइन पब्लिशर्ज़

Soni House, WZ-348, Nangal Raya,
New Delhi-110046

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कला सज्जा :

जैन कंप्यूटर्स

प्राक्कथन

यह पुस्तकमाला 'एवरशाइन रत्नमाला' राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित है । राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की नई रूपरेखा में बच्चे को पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखा गया है, इसीलिए इस पुस्तकमाला की पाठ्य सामग्री का चयन करते समय बच्चे के भाषायी विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है, साथ ही बच्चों की बौद्धिक क्षमता, रुचि और उनके लिए उपयोगिता को भी पर्याप्त महत्व दिया गया है । पाठों के चयन में केंद्रीय शिक्षा सुझावों पर आधारित विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया है । पुस्तकमाला को विविधतापूर्ण और रोचक बनाने के लिए गद्य की विभिन्न विधाओं जैसे निबंध, कहानी, जीवनी, संस्मरण, एकांकी, यात्रा वृत्तांत, उपन्यास अंश आदि पर आधारित पाठ सम्मिलित किए गए है । साथ ही देश प्रेम, नीति, कर्तव्य भावना और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण कविताएँ भी दी गई हैं । बच्चों को कविता की आधुनिक रचना शैली से परिचित कराने के लिए नई कविता के पाठ भी दिए गए हैं, जिससे साहित्य की समग्रता के प्रति बच्चों की रुचि बढ़े और उनके ज्ञान एवं ग्रहण कौशल का विकास हो सके ।

पाठों को अच्छी तरह हृदयंगम कराने के लिए प्रत्येक पाठ के अंत में विस्तृत अभ्यास प्रश्न दिए गए हैं । 'बोध और विचार' के अंतर्गत पठित विषय वस्तु को समझने और उस पर विचार करने की योग्यता उत्पन्न करने से संबंधित प्रश्न सम्मिलित किए गए हैं । 'भाषा और व्याकरण' के अंतर्गत भाषा कौशल, वाक्य विन्यास, वाक्य रचना संबंधी प्रश्न दिए गए हैं । 'योग्यता विस्तार' के अंतर्गत ऐसे क्रिया कलाप दिए गए हैं, जो बच्चों में बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने की क्षमता का विकास कर सकें । प्रत्येक पाठ के अंत में 'शब्द कोश' भी दिया गया है, जिसमें पाठ में आए कठिन शब्दों के शब्दार्थ और प्रसंगगत अर्थ बताए गए हैं ।

इस पुस्तकमाला में जिन लेखकों और कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उनके प्रति हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं । पुस्तक में संशोधनार्थ दिए गए आपके अमूल्य सुझावों का हम सहर्ष स्वागत करेंगे । आशा है, पूर्व की भाँति आपका सहयोग हमें निरंतर मिलता रहेगा ।

— लेखक एवं प्रकाशक

पाठ क्रम

	पाठ	विधा	पृष्ठ
1.	विमल इंदु की विशाल किरणें	कविता	5
2.	चरित्र और संयम	प्रवचन	8
3.	पंच परमेश्वर	कहानी	12
4.	आप भले तो जग भला	निबंध	19
5.	इतने ऊँचे उठो	कविता	25
6.	सरोजिनी नायडू	जीवनी	28
7.	क्रोध	निबंध	32
8.	छोटा जादूगर	कहानी	36
	जाँच पत्र – 1		42
9.	वीरों की पूजा	कविता	43
10.	जब मैंने तैरना सीखा	हास्य-व्यंग्य	46
11.	हार की जीत	कहानी	52
12.	अच्छे नागरिक	निबंध	58
13.	जिसमें शक्ति विजय की	कविता	62
14.	शिवाजी और गौहरबानू	एकांकी	66
15.	भाग्य और बुद्धि	कहानी	72
16.	देश और हम	निबंध	76
	जाँच पत्र – 2		80
17.	नर हो, न निराश करो मन को	कविता	81
18.	जुम्मन का दर्द	कहानी	85
19.	सत्साहस	निबंध	90
20.	देशरत्न राजेंद्र बाबू	संस्मरण	95
21.	अनंत आकाश	निबंध	101
22.	अँधेर नगरी	एकांकी	105
23.	समर्पण	कविता	112
24.	वन संरक्षण	निबंध	115
	जाँच पत्र – 3		120
	रचनात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन (सी सी ई पाठ्यक्रम पर आधारित)		121

1 विमल इंदु की विशाल किरणें

इस कविता के रचयिता श्री जयशंकर प्रसाद की गणना हिंदी के महान साहित्यकारों में की जाती है । आपने अनेक काव्य ग्रंथों की रचना की । 'कामायनी' आपका विश्वविख्यात महाकाव्य है । आपने ऐतिहासिक नाटकों, उपन्यासों और कहानियों की भी रचना की । चंद्रगुप्त, ध्रुव स्वामिनी, स्कंदगुप्त, कंकाल, तितली आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं ।

विमल इंदु की विशाल किरणें,
प्रकाश तेरा बता रही हैं ।
अनादि तेरी अनंत माया,
जगत को लीला दिखा रही हैं ।।

प्रसार तेरी दया का कितना,
ये देखना हो तो देखे सागर ।
तेरी प्रशंसा का राग प्यारे,
तरंगमालाएँ गा रही हैं ।।

तुम्हारा स्मित हो जिसे निरखना,
वो देख सकता है चंद्रिका को ।
तुम्हारे हँसने की धुन में नदियाँ,
निनाद करती ही जा रही हैं ।।

जो तेरी होवे दया दयानिधि,
तो पूर्ण होता ही है मनोरथ ।
सभी ये कहते पुकार करके,
यही तो आशा दिला रही हैं ।।

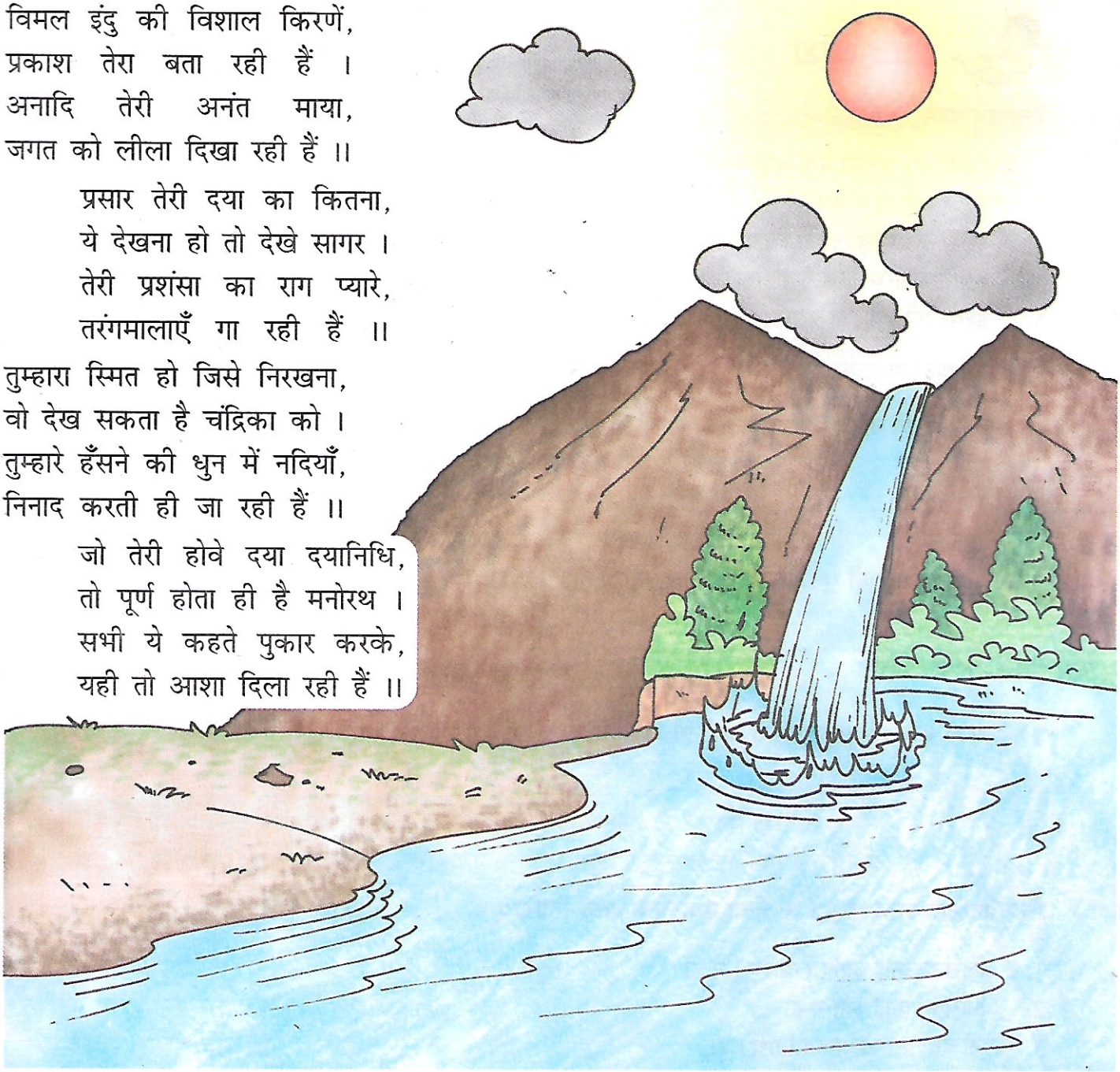

शब्द कोश

विमल	=	निर्मल	स्मित	=	मुस्कान
अनादि	=	जिसका कोई आरंभ न हो	चंद्रिका	=	चाँदनी
अनंत	=	जिसका कोई अंत न हो	निनाद	=	ध्वनि, गुंजार
तरंगमालाएँ	=	लहरों के समूह	दयानिधि	=	दया का भंडार, ईश्वर
प्रसार	=	विस्तार	मनोरथ	=	मन की इच्छा

अभ्यास

भाव बोध

(क) लिखित प्रश्न

1. ईश्वर को अनादि क्यों कहा गया है ?
2. ईश्वर की माया कैसी है ?
3. ईश्वर की मुस्कान को किसमें देखा जा सकता है ?
4. हमारा मनोरथ कैसे पूर्ण होता है ?
5. ईश्वर की दया का प्रसार किसमें देखा जा सकता है ?

(ख) निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए –

1. अनादि तेरी अनंत माया, जगत को लीला दिखा रही है ।

2. तुम्हारे हँसने की धुन में नदियाँ, निनाद करती ही जा रही हैं ।

3. सभी ये कहते पुकार करके, यही तो आशा दिला रही हैं ।

(ग) निम्नलिखित शब्द समूहों के लिए एक-एक शब्द लिखिए –

1. जिसका कोई आदि (आरंभ) न हो
2. जिसका कोई अंत न हो
3. जो दया का खजाना (निधि) हो

(घ) इस कविता से छाँटकर वे चार पंक्तियाँ लिखिए, जो आपको सबसे अच्छी लगी हैं –

.....

.....

.....

.....

ये पंक्तियाँ आपको क्यों अच्छी लगी हैं ?

.....

.....

.....

(ङ) निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए –

इंदु	.....	.....	स्मित	.....	.....
जगत	.....	.....	सागर	.....	.....
तरंग	.....	.....	चंद्रिका	.....	.....
नदी	.....	.....	मनोरथ	.....	.....

(च) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए –

प्रकाश	.....	विशाल	.....
पूर्ण	.....	आशा	.....
प्रशंसा	.....	दया	.....

(छ) निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

विमल .....

प्रसार .....

निनाद .....

राग .....

मनोरथ .....

योग्यता विस्तार

1. इस कविता को कंठस्थ करके अपनी कक्षा में हाव-भाव के साथ सुनाइए ।
2. ईश्वर की प्रार्थना से संबंधित कुछ कविताओं का एक लघु संकलन तैयार कीजिए ।